छंद

<u>छंद शब्द की व्युत्पति एवं अर्थ:-</u> छंद शब्द 'छद्' धातु से 'असुन' प्रत्यय के जुड़ने से बना है शब्दकोश के अनुसार छंद शब्द के निम्नानुसार अनेक अर्थ ग्रहण किये जाते है।

1. बांधना
2. आच्छादित करना
3. प्रसन्न करना
4. फुसनाना
5. आंकाक्षा या कामना करना
6. अक्षर संख्या का परिणाम करना

छंद की परिभाषा:- व्याकरण ग्रंथो में छंद की परिभाषा के लिए निम्नलिखित दो सूत्र प्रतिपादित किये गए है।

1. सूत्र - "यदक्षरपरिमाणः तच्छन्दः" ।
(यत अक्षर परिमाणः तद् छन्दः)
अर्थात् ऐसी रचना जिसमें अक्षरों की मात्रा का ध्यान रखा जाता हे उसे छंद कहते हैं।

2. सूत्र - "जातिर्वृत्याख्या मर्यादा छंदः"।
(जातिः वृति आख्या मर्यादा छंदः)
अर्थात् ऐसी रचना जिसमें मात्राओं एवं वर्णो के मर्यादा का पालन किया जाता है उसे छंद के नाम से पुकारा जाता है।
सामान्यतः यति, गति, तुक पाद या चरण, दल मात्राओं गण इत्यादि के नियमों से युक्त रचना छन्द कहलाती है।

<u>छन्द के भेद</u>
छंद के तीन भेद किए गए हैं-
(1) मात्रिक छंद,
(2) वर्णिक छंद और
(3) लयात्मक छंद.

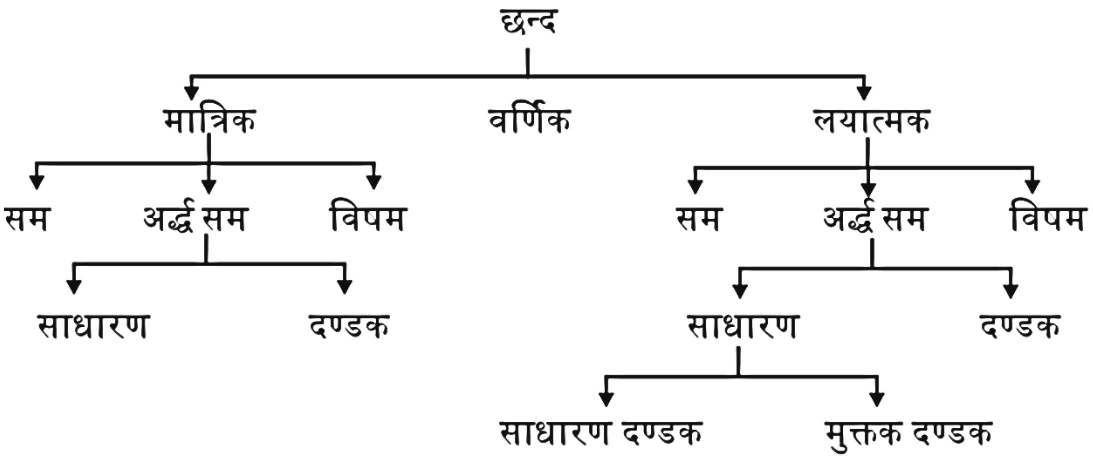

I. मात्रिक छंद - जिस छंद में मात्राओं का नियमित विधान होता है-उसके प्रत्येक चरण में एक सुनिश्चित संख्या में मात्राएँ होती हैं, उसे मात्रिक छंद कहा जाता है. तात्पर्य यह है कि गणना करने पर जिस छंद के प्रत्येक चरण में मात्राओं की संख्या निश्चित हो. इसे मात्रिक छंद कहते हैं. दोहा, चौपाई, सोरठा आदि मात्रिक छंद हैं.

शशि मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाए
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम पाए ।

इस छंद के प्रत्येक चरण में 14 मात्राएँ हैं.
मात्रिक छंदों के पुनः तीन भेद किए गए हैं- सम, विषम और अर्द्धसम.

सम छंद - सम छंद के चारों चरणों की मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या समान होती है.

विषम छंद - विषम छंद का प्रत्येक चरण मात्रा और वर्ण की दृष्टि से भिन्न होता है. इसके चरणों में मात्रा अथवा वर्ण समान नहीं होते.

अर्द्धसम छंद - जिस छंद में प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों की मात्राएँ अथवा वर्ण समान संख्या में होते हैं, उसे अर्द्ध सम छंद (वृत्त) कहते हैं. इसमें प्रथम और द्वितीय तथा तृतीय एवं चतुर्थ चरणों की मात्राएँ भिन्न संख्या वाली होती हैं. सम छंद के दो अन्य भेद किए गए हैं-
(क) साधारण और (ख) दण्डक.

(क) साधारण - जिन मात्रिक सम छंदों में 32 अथवा इससे कम मात्राएँ होती हैं, उन्हें साधारण सम मात्रिक छंद कहते हैं.
(ख) दण्डक - जिन सम मात्रिक छंदों में 32 से अधिक मात्राएँ होती हैं, उन्हें दण्डक कहते हैं. इसी प्रकार प्रत्येक चरण में 26 तक वर्ण वाले वर्णिक छंद को साधारण सम वर्णिक छंद कहते हैं तथा जिनके प्रत्येक चरण में 26 से अधिक वर्ण होते हैं, उन्हें दण्डक कहते हैं.

II. वर्णिक छंद - जिस छंद के चरणों में मात्राओं का नियम न होकर, वर्णों की संख्या निश्चित हो, वह छंद वर्णिक छंद कहलाता है. इन्द्रवज्रा, वंशस्थ आदि वर्णिक छंद हैं.

कैसे मैं फिरूँगा मुझे कौन बताए ?
कैसे मैं फिरूँगा हाय शून्य लंका धाम में ?

दूंगा सान्त्वना क्या मैं तुम्हारी उस माता को ?
कौन बतलाएगा मुझे हे वत्स पूछेगी ?

इस छंद में प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या 15 है.
अतः वर्णों की संख्या का नियमित विधान होने से यह वर्णिक छंद है.

III. लयात्मक छंद - लयात्मक छंद में न मात्राओं का नियम होता है और न वर्णों की संख्या समान होती है. जयशंकर प्रसाद का यह गीत लयात्मक छंद का अच्छा उदाहरण है-

बीती विभावरी जाग री
खग-कुल कुल सा बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा
लो, यह लतिका भी भर लाई
मधुमुकुल नवल रस गागरी।

इस छंद में मात्रा और वर्ण की गिनती इस प्रकार है-

मात्रा	**वर्ण**
15	9
16	13
12	9
16	14

इस छंद के चरणों में न तो मात्राओं की संख्या समान है और न वर्णों की ही यहाँ केवल लय का विधान ही छंद को गतिमान बना रहा है.

छंद से सम्बन्धित कुछ पारिभाषिक शब्द

मात्रा - किसी स्वर के उच्चारण करने में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं, ह्रस्व स्वर के उच्चारण करने के समय को एक मात्रा तथा दीर्घ स्वर के उच्चारण समय की दो मात्राएँ मानी जाती हैं. छंदशास्त्र में दीर्घ को गुरु और ह्रस्व को लघु कहा जाता है. लघु का सूचक संकेत (।) है और गुरु का सूचक संकेत (ऽ) है. वर्णिक छंदों में गण के अतिरिक्त लघु के लिए (ल) और गुरु के लिए (ग) संकेत चिह्न माने जाते हैं. व्यंजनों की मात्राओं का विचार उसमें जुड़े स्वरों की मात्राओं के अनुसार होता है. अकेले व्यंजन (क्, ख्, त्, न्, फ् आदि) की कोई मात्रा नहीं मानी जाती है.

लघु- अ, इ, उ, ऋ की एक मात्रा होती है. जिन व्यंजनों के साथ ये स्वर मिले रहते हैं, उनकी भी एक मात्रा मानी जाती है; जैसे-
क् + अ = क - एक मात्रा
क् + इ = कि - एक मात्रा
क् + उ = कु - एक मात्रा
क् + ऋ = कृ - एक मात्रा

गुरु- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ की दो-दो मात्राएँ मानी जाती हैं. ये गुरु स्वर कहलाते हैं. जिन व्यंजनों के साथ ये स्वर जुड़े रहते हैं, उनकी दो मात्राएँ मानी जाती हैं; यथा-
क् + आ = का - दो मात्राएँ
क् + ई = की - दो मात्राएँ
क् + ए = के - दो मात्राएँ
क् + ऐ = कै - दो मात्राएँ
क् + ओ = को - दो मात्राएँ
क् + औ = कौ - दो मात्राएँ

द्रष्टव्य- (i) विसर्ग तथा अनुस्वार से युक्त वर्ण की दो मात्राएँ होती हैं. अर्थात् इन्हें दीर्घ माना जाता है, जैसे- प्रातः, यहाँ तः की दो मात्राएँ गिनी जाएंगी. कंधा, यहाँ अनुस्वार से युक्त कं को दीर्घ कहा जाएगा और उसकी दो मात्राएँ मानी जाएंगी.

(ii) यदि किसी लघु वर्ण के बाद संयुक्त व्यंजन हो, तो वह लघु वर्ण दीर्घ माना जाएगा, उदाहरणतः सज्जा. यहाँ स दीर्घ माना जाएगा और इसकी दो मात्राएँ होंगी. इसी प्रकार चित्र में संयुक्त वर्ण होने के कारण चि की दो मात्राएँ मानी जाएंगी और इसे दीर्घ कहा जाएगा. चन्द्र बिन्दु से युक्त वर्ण की एक ही संख्या मानी जाएगी, जैसे हँसना में हँ को लघु वर्ण कहा जाएगा और इसकी एक मात्रा कही जाएगी.

(iii) छंदों के अन्तिम वर्ण को कभी-कभी दीर्घ मान लिया जाता है, क्योंकि उसके उच्चारण में अधिक समय लगता है. इसी प्रकार जिन दीर्घ वर्णों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें छंद की दृष्टि से लघु माना जाता है.

उदाहरणतः-

ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावें ।

यहाँ की तथा पै दीर्घ वर्ण हैं, पर छंद में इन पर कम भार पड़ने से इन्हें लघु माना जाएगा और इनकी एक-एक मात्रा गिनी जाएगी.

चरण अथवा पाद- प्रत्येक छंद के चार चरण होते हैं, उन्हें पाद भी कहा जाता है.

यति अथवा विराम- छंद को पढ़ते अथवा गाते समय जिस वर्ण पर नियमित रूप से रुकते हैं, यह रुकने की क्रिया यति अथवा विराम कहलाती है. संकेत के रूप में रु वर्ण के बाद अर्ध विराम का चिह्न (,) लगाया जाता है.

यति अथवा विराम - छंद को पढ़ते अथवा गाते समय जिस वर्ण पर नियमित रूप से रुकते हैं, यह रुकने की क्रिया यति अथवा विराम कहलाती है. संकेत के रूप में रु वर्ण के बाद अर्ध विराम का चिह्न (,) लगाया जाता है.

गति - कविता में केवल मात्रा तथा वर्ण का ही विचार नहीं किया जाता, अपितु उसकी गति भी देखनी पड़ती है. गति का अभिप्राय है प्रवाह. छंद के वर्णों के क्रम को बदल देने पर उसकी मात्राओं तथा वर्णों की संख्या में तो परिवर्तन नहीं होता है, किन्तु उसकी गति भंग हो जाती है और उसको पढ़ने में पहले जैसा आनन्द नहीं आता है. यदि पढ़ने में कविता के प्रवाह में विघ्न पड़े, तो वहाँ गति भंग दोष कहा जाता है.

उदाहरण के लिए-

प्रियतम बतलाओ मेरा प्राण प्यारा कहाँ है ?

यदि इस पंक्ति को इस प्रकार लिखा जाए - बताओ प्रियतम कहाँ है प्राण प्यारा मेरा, तो मात्राओं और वर्णों की संख्या वही रहती है, परन्तु पढ़ने में या सुनने में पूर्ववत् आनन्द नहीं आता है. स्पष्ट ही यहाँ गति भंग दोष है.

तुक - प्रत्येक चरण, दूसरे अथवा चौथे चरण के अन्त में आने वाले समान स्वरयुक्त वर्ण तुक कहलाते हैं. जिन छंदों के प्रत्येक चरण में समान स्वर वाले वर्ण होते हैं, उनको तुकान्त छंद कहते हैं - दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदि तुकान्त छंद हैं. तुकान्त छंदों का सर्वाधिक प्रयोग हिन्दी कविता में होता है. सन् 1927 से निराला आदि छायावाद के कवियों ने अतुकान्त छंदों का प्रयोग आरम्भ किया और इनका चलन अब दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है. संस्कृत और उर्दू में तुकान्त छंदों का प्रयोग बहुत विस्तृत रूप में पाया जाता है. अंग्रेजी में दोनों प्रकार के तुकान्त अतुकान्त छंदों का प्रयोग पाया जाता है.

गण- तीन तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं. वर्णों के लघु और दीर्घ के विचार से गणों की संख्या आठ मानी जाती है.

नीचे सारणी में गणों के नाम, रूप, उदाहरण तथा लक्षण दिए जा रहे हैं-

नाम	रूप	उदाहरण	लक्षण
1. यगण	। ऽ ऽ	बहाना	आदि लघु मध्य गुरु अन्त गुरु
2. मगण	ऽ ऽ ऽ	वेशाला	आदि मध्य ओर अन्त गुरु
3. तगड़	ऽ ऽ ।	सरकार	आदि व मध्य गुरु, अन्त लघु
4. रगण	ऽ । ऽ	नारजा	आदि गुरु, मध्य लघु, अन्त गुरु
ऽ. जगण	। ऽ । ऽ	गुलाब	आदि अन्त लघु मध्य गुरु
6. भगण	ऽ । ।	मानस	आदि गुरु मध्य ओर अंत लघु
7. नगण	। । ।	सरस	आदि मध्य और अन्त लघु
8. सगण	। । ऽ	सरला	आदि मध्य लघु, अन्त गुरु

प्रमुख छंदों के लक्षण और उदाहरण (क) मात्रिक छंद

(1) सम / तोमर

लक्षण - प्रत्येक चरण या दल में 12 मात्राएँ होती हैं. चरण के अन्त में गुरु लघु (ऽ ।) होते हैं.

उदाहरण –

जय राम शोभा धाम
दायक विनत विश्राम
धृतत्रोन बर धर चाम
पुन दण्ड प्रबल प्रताप

(2) चौपई

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण या दल में 15 मात्राएँ होती हैं. चरण के अन्त में गुरु लघु (ऽ ।) होते हैं.

(3) चौपाई

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण या दल में 16 मात्राएँ होती हैं तथा अन्त गुरु लघु (ऽ ।) नहीं होने चाहिए.

उदाहरण –

भगति जोग सुनि अति सुख पावा ।
लछिमन प्रभु चरनहिं सिर नावा ।।
एहि विधि गए कछुक दिन बीती ।
कहत विराग ग्यान गुन नीती ॥

(4) अरिल्ल

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं. अन्त में दो लघु अथवा यगण (ऽ ऽ) होना चाहिए.

मन में विचार इस विधि आया।
कैसी है यह प्रभुवर माया ।
क्यों आगे खड़ी विषम बाधा ।
मैं जपता रहा कृष्ण-राधा ।

(5) लावनी

लक्षण - प्रत्येक चरण या दल में 22 मात्राएँ तथा चरण के अन्त में गुरु (ऽ).

उदाहरण -

धरती के उर पर जली अनेक होली ।
पर रंगों से भी जग ने फिर नहलाया ।
मेरे अन्तर की रही धधकती ज्वाला ।
मेरे आँसू ने ही मुझको बहलाया ।

(6) राधिका

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 22 मात्राएँ होती हैं. 13 व 9 पर विराम होता है.

उदाहरण -

बैठी है वसन मलीन पहिन एक बाला ।
बुरहन पत्रों के बीच कमल की माला ।
उस मलिन वसन में अंग प्रभा दमकीली ।
ज्यों धूसर नभ में चन्द्र कला चमकीली ।

(17) उल्लाला (उल्लाल)

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं. प्रथम व तृतीय (विषम) चरणों में 15 तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में 13 मात्राएँ होती हैं.

उदाहरण-

करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी उस वेश की ।
हे मातृभूमि ! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की ।

सुविधा की दृष्टि से दोहा, सोरठा और उल्लाला को दो पंक्तियों में लिखा जाता है.

(18) छप्पय

लक्षण - इसमें छः चरण होते हैं. प्रथम चार चरण रोला छंद के होते हैं तथा अन्तिम दो चरण उल्लाला छंद के होते हैं.

उदाहरण-

नीलाम्बर परिधान, हरति तट पर सुन्दर है । } 11 + 13 = 24
सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है । } रोला

नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मण्डल हैं। } 11 + 13 = 24
बन्दीजन खगवृंद, शेष फन सिंहासन हैं । } रोला

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की । } 15 + 13 = 28
मातृभूमि ! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की । } उल्लाला

(19) कुंडलियाँ

लक्षण - इसमें छः चरण होते हैं. आरम्भ के दो चरण दोहा तथा बाद के चरण उल्लाला के होते हैं. इस प्रकार प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं. दोहे का चतुर्थ चरण रोला के प्रारम्भ में रखा जाता है. दोहे का सर्वप्रथम शब्द रोला के अन्तिम चरण के अन्त में प्रायः आता है. इस प्रकार इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं.

उदाहरण -

घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध ।
बाहर का बक हंस है, हंस घरेलू गिद्ध ।
हंस घरेलू गिद्ध, उसे पूछे ना कोई ।
जो बाहर कर होइ, समादर पाता सोई ।
चित्तवृत्ति यह दूर कभी न किसी की होगी ।
बाहर ही धक्के खाएगा, घर का जोगी ।

(ख) प्रमुख वर्णिक छन्द (सम)

(1) शालिनी

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं तथा एक मगण, दो तगण तथा अन्त में दो गुरु.

उदाहरण –

बीथी- बीथी साधु को संग पैये ।
संगै संगै कृष्ण की कीर्ति गैये ।
गाये गये एक ताई प्रकासे ।
एकै एकै सच्चिदानन्द भासै ।

(2) इन्द्रवज्रा

लक्षण - प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, दो तगण, एक जगण तथा अन्त में दो गुरु.

उदाहरण-

माता यशोदा हरि को जगावै ।
प्यारे उठो मोहन नैन खोलो ।
द्वारे खड़े गोप बुला रहे हैं ।
गोविन्द दामोदर माधवेति ।

(3) उपेन्द्रवज्रा

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण, एक नगण, एक तगण, एक जगण, अन्त में दो गुरु.

उदाहरण -

पखारते हैं पद पद्म कोई
चढ़ा रहे हैं फल-पुष्प कोई
करा रहे हैं पय पान कोई
उतारते श्रीधर आरती हैं।

(4) उपजाति

लक्षण - इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मिलाने से उपजाति वर्णिक छंद बनता है.

उदाहरण -

गम प्रधानो हि तपो घनों में
।ऽ। ऽऽ। । ।ऽ। ऽ ऽ = 11
जगण तगण नगण मु. गु. उपेन्द्रवज्रा
गूढ़ प्रदाहात्मका तेज होता
ऽ। ।ऽ ऽ। ऽ। ऽ ऽ = 11
तगण जगण नगण गु. गु. इन्द्रवज्रा
छुएँ सभी श्रीयुत चन्द्रकान्ता
। ऽ। ऽ ऽ। । ऽ।ऽऽ = 11
नगण तगण जगण गु. गु. इन्द्रवज्रा
दर्पान्त से अन्य सदैव ज्वाला
ऽ ऽ।। ऽ ।ऽ ऽ = 11
तगण तगण जगण गु. गु. उपेन्द्रवज्रा

(5) भुजंगी

लक्षण - प्रत्येक चरण में 11 वर्ण तथा तीन यगण, एक लघु तथा एक गुरु.

उदाहरण -

न माधुर्य का तेरा भी पार है।
महामोद भागीरथी - सी भरी।
करो स्नान आओ शांति से।
मिले मुक्ति ऐसी न पाते यती।

(6) त्रोटक / तोटक

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण तथा चार सगण.

उदाहरण-

शशि से सखियाँ विनती करतीं।
टुक मंडल हो पग तो परतीं।
हरि के पद पंकज देखन दे।
पदि मोटक माहिं निहारन दे।

(7) भुजंग प्रयात

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण तथा चार यगण.

उदाहरण -

जिसे जन्म की भूमि भाती नहीं है।
जिसे देश की याद आती नहीं है।
कृतघ्नी भला कौन ऐसा मिलेगा ?
उसे देखजी का क्या किसी का खिलेगा ?

(8) मोतियदान या मौक्तिकदान

लक्षण - प्रत्येक चरण में 12 वर्ण, चार जगण.

उदाहरण –

बड़े जन को नहिं मागन जोग।
फबै छल साधन में लघु लोग।
रमापति विष्णु असंग अनूप।
धर्यो यहि कारण बामन रूप।

(9) द्रुतविलम्बित

लक्षण - प्रत्येक चरण में 12 वर्ण, एक नगण, तथा एक रगण, दो भगण

उदाहरण -

दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिक्षा पर थी अवराजती।
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा।

(10) वंशस्थ

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण तथा एक नगण, एक तगण, एक जगण तथा एक रगण.

उदाहरण -

गिरीन्द्र में व्याप्त विलोकनीय थी।
वनस्थली मध्य प्रशंसनीय थी।
अपूर्व शोभा अवलोकनीय थी।
असेत जम्बालिनि कूल जम्बु की।

(11) वसन्ततिलका

लक्षण - प्रत्येक चरण में 14 वर्ण, एक तगण, एक भगण, दो जगण तथा दो गुरु, आठवें वर्ण पर यति होती हैं.

उदाहरण -

श्री राधिका मधुर मोदमयी मनोज्ञा।
नाना मनोहर रहस्यमयी अनूठी।
जो है सदैव लतिकादिक संग सोहै।
होती दयालु अपने समुपासकों को।

(12) मालिनी

लक्षण - प्रत्येक चरण में 15 वर्ण, दो तगण, एक मगण तथा 2 यगण होते हैं. आठ एवं सात पर विराम होता है. **उदाहरण -**

प्रमुदित मथुरा के मानवों को बना के।
सकुशल रहे के औ, विघ्न बाधा बचाके।
निज प्रिय सुत दोनों साथ लेके सुखी हो।
जिस दिन पलटेंगे, गेहं स्वामी हमारे।

(13) शिखरिणी

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण, एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण और एक गुरु. छठवें और ग्यारहवें वर्ण पर विराम होता है.

उदाहरण-

सिला पै गेरु सें कुपित ललना तोहि लिख कै।
धर्यौं जो लौं चाहूँ सिर अपन तेरे पगन पै।
चलें तो लौं आँसू उमगि मग रोकें दृगनि कै।
नहीं धाता धाती चहत हम याहू विधि मिलें।

(14) मन्दाक्रांता

लक्षण - इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं. एक मगण, एक भगण, एक नगण दो तगण तथा दो गुरु होते हैं. चौथे, छठे तथा सातवें वर्ण पर विराम होता है.

उदाहरण-

कोई क्लान्ता पथिक ललना चेतना शून्य होके।
तेरे जैसे प्रिय पवन से सर्वथा शांति का भी।